ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 8, Issue 2, February 2018 Impact Factor 5.132 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

भारत में शहरीकरण के आ र्थक और सामाजिक परिणाम का अध्ययन

जितेंद्र महाजन

सहयोगी प्राध्यापक

सी.पी. अँड बेरार महा वद्यालय, नागपूर, महाराष्ट्र

प्रस्तावना:

शहरीकरण का सीधा संबंध शहर से है और शहर से जुड़ी कई वशेषताएं हैं। क्यों क हर छोटे और बड़े शहर और महानगर की अपनी प्रकृति और वशेषताएं हैं। हालाँ क, शहरीकरण की प्र क्रया शहर से शहर में भन्न होती है। इस लए सभ्यता की प्र क्रया की अवधारणा की कोई सामान्य परिभाषा नहीं है। सामान्य तौर पर, शहरीवाद या शहरीकरण और शहरीकरण एक ही अर्थ में उपयोग कए जाते हैं। इसमे अंतर है। हम शहरीकरण का उपयोग शहरीकरण की घटना की पहचान करने के लए करते हैं, शहरीकरण का उपयोग जीवन के एक व शष्ट तरीके की पहचान करने के लए कया जाता है, जो आश्चर्यजनक रूप से शहरीकरण से जुड़ा हुआ है।

वास्त वक शहरीकरण एक सतत प्र क्रया है, जो एक या दूसरे रूप में ग्रामीण और शहरी जीवन में केंद्रित है। सभ्यता और औद्योगीकरण से वे निकट से संब धत हैं। औद्योगीकरण से उद्योगों का वकास होता है और शहरों के वकास के साथ-साथ नए शहरों का निर्माण होता है। शहरीकरण प्र क्रया की कमी के कारण शहरी वकास संभव नहीं है। औद्योगीकरण की प्र क्रया के परिणामस्वरूप शहरी वकास संभव है। । इस प्रकार शहरीकरण और औद्यो गकीकरण का अटूट संबंध है।

वर्तमान मे भारत के शहरीकरण की दिशा कैसी है? भारत के शहरीकरण के आ र्थक और सामाजिक परिणाम क्या है? भारत के शहरीकरण की दिशा में कैसे परिवर्तन हो रहे है? भारत के शहरीकरण वृ द्ध के क्या कारण है? भारतीय शहरीकरण की प्रवृत्ति कैसी है? आदि प्रश्नो के उत्तर जानने हेतु इस अनुसंधान का यह वषय चुना गया है।

अनुसंधान निबंधों के लए प्रयुक्त अनुसंधान व धयाँ:

वर्तमान शोध प्रबंध के लए उपयोग की जाने वाली जानकारी और तथ्यों को वषय से संब धत पुस्तकों, व भन्न पत्रिकाओं, लेखों, वेबसाइटों और समाचार पत्रों से संक लत कया गया है।

अनुसंधान के उद्देश्य:

1) भारत के शहरीकरण की दिशा कैसी है इसका अध्ययन करना।
2) भारतीय शहरीकरण की प्रवृत्ति कैसी है इसका अध्ययन करना।

3) भारत के शहरीकरण की दिशा में होने वाले परिवर्तनो को जानना।

4) भारत के शहरीकरण आ थक और सामाजिक परिणाम को जानना।

5) भारत के शहरीकरण में वृ द्ध के कारणो की खोज करना।

शहरीकरण का अर्थ:

शहरीकरण की व्याख्या करते हुए, बर्गेल लखते हैं," ग्रामीण क्षेत्र को शहरी क्षेत्र में बदलने की प्र क्रया को शहरीकरण कहा जाना चाहिए। इस प्र क्रया का ग्रामीण आबादी की आ थक संरचना पर गहरा प्रभाव पड़ता है। गाँव की आबादी जितनी कम होगी, कस्बे की आबादी उतनी ही ज़्यादा होगी। "

शहरीकरण और शहरीकरण के बीच भेद करते हुए, बर्गेल लखते हैं, "शहरीकरण को एक प्र क्रया या शहरीवाद के रूप में एक देश या स्थिति की राजधानी के रूप में समझा जाएगा।"

भारत में शहरीकरण के आ थक और सामाजिक परिणाम:

शहरीकरण के प्रभाव का कोई भी वचार कई चर को ध्यान में रखना चाहिए। उन लोगों का व्यवहार और मूल्य जो शहरीकरण से प्रभा वत हो सकते हैं, व्यक्तियों की भौगो लक स्थिति को प्रभा वत करते हैं, चाहे वह शहरों में रह रहे हों या भीतरी इलाकों में। शहरों के राजनीतिक, आ थक और व्यावसायिक संगठन पर प्रभाव हो या भीतरी इलाकों, स्वास्थ्य, शक्षा, इसमें शा मल व्यक्तियों का सामान्य कल्याण। यह भी ध्यान में रखा जाना चाहिए क समाजों की सामाजिक और सांस्कृतिक प्रणा लयाँ अलग-अलग हैं और इन अंतरों का एक शहर और उसके भीतरी इलाकों के बीच पारस्परिक संबंधों पर असर पड़ता है। भारत मे शहरीकरण ने शहरी जीवन के व भन्न क्षेत्रों में कई बदलाव लाए हैं, अर्थात् शारीरिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक पहलू में यह बदलाव हुये है।

भारत में औद्योगीकरण से शहरी आबादी में वृ द्ध हुई है, जो शहरी भू म पर और दबाव बनाता है। नतीजतन, जगह की कमी है, और परिणामस्वरूप भीड़भाड़ बढ़ रही है। नगरपा लका के अ धकारियों को अब यह भी मुश्किल हो रहा है क वे शहर के प्रवा सयों और मौजूदा आबादी को बुनियादी सु वधाएं मुहैया करा सकें। बुनियादी सु वधाओं में उपभोक्ता सामान (भोजन और पाणी), आश्रय और संक्रामक रोगों से सुरक्षा शा मल है। जनसंख्या में वृ द्ध का एक अन्य प्रमुख परिणाम वस्तुओं की मांग और आपूर्ति के बीच बना असंतुलन है। मुद्रास्फीति और पर्याप्त आपूर्ति की कमी के कारण कीमतें अत्य धक बढ़ रही हैं।

परिवहन और संचार की लागत में कमी और शहरों में बेहतर जीवन व्यापन करने का स्वप्न शहरों में अ धक से अ धक लोगों को आक र्षत कर रहा है। इसका परिणाम है क सभी दिशाओं में शहरों का बेतरतीब वकास हो रहा है, जिसमें आकाश की ओर भीषण, ऊंची और ऊंची इमारतों के रूप में दिख रहा

है जो अ धक संख्या में घरों को समायोजित कर सकते हैं। पहले, शहरों को उनकी योजना और बेहतर रहने की सह-स्थितियों के लए जाना जाता था। ले कन आज शहर अपने जीवनशैली और बुनियादी सु वधाओं की कमी के कारण लोक प्रय हो रहे हैं। यदि कोई व्यक्तिगत प्रवासी के दृष्टिकोण से देखता है, तो यह सच है क शहर अवसर प्रदान करते हैं, और प्रतिस्पर्धा भी प्रदान करते हैं। भारत में इन अवसरों की तलाश में शहरों में आने वाले सभी लोग सफल नहीं हो सकते हैं। इसका परिणाम झुग्गी, बस्तियों, मादक पदार्थों की तस्करी, वेश्यावृत्ति, भखारी और डकैती बढ़ रही है।

बेघर होना शहरी जीवन की एक और परेशान निर्माण करने वाली वशेषता है। शहर में आवास की समस्या बहुत वकट है। बहुत से लोग जो उच्च कराए का भुगतान करने में असमर्थ। कुछ अन्य मामलों में, लोग भीड़-भाड़ वाले अपार्टमेंट में रहते हैं। कुछ अन्य, जो आंतरिक शहर के क्षेत्र में आवास के लए भुगतान करने में असमर्थ हैं, उन्हें लंबी दूरी की यात्रा करने के लए मजबूर कया जाता है, जो अपना अ धकांश समय और ऊर्जा गवा लेते है। इस लए, बेघर होना आज भारत के कई बड़े शहरों में एक गंभीर समस्या है।

भारत में शहरों के निरंतर वस्तार ने शहरों के बाहरी कनारों में वकास तेज कर दिया है, जहां अ वक सत और निर्जन भू म है। इस वकास के कारण उपनगरीय क्षेत्रों का वकास हुआ। उपनगर ऐसे क्षेत्र हैं जो कभी गांव थे और वस्तार के बावजूद शहर इन गांवों से जुड़ गए है। कुछ उपनगर तब बनते हैं जब कुछ औद्यो गक परिसर अपने कर्मचारियों को निवास प्रदान करते हैं। समय के साथ, इस क्षेत्र में एक टाउन शप बनाया जाता है, जिससे एक उपनगर बनता है। इन उपनगरों में सामाजिक संपर्क रचना उपनगर के प्रकार पर निर्भर करता है। आवासीय उपनगर में, लोग यात्रा में अ धक समय बिताते हैं, इस लए उनके पास सामाजिक संपर्क के लए शायद ही कोई समय होता है; जो आमतौर पर पुरुष सदस्य होता है, घर से अ धक समय तक दूर रहता है। इस लए, महिलाएं उपनगरीय जीवन में महत्वपूर्ण भू मकाएं ग्रहण कर सकती हैं। शहरी लोगों की तुलना में उपनगरों के लए मूल्य, मानक, वश्वास और प्राथ मकताएं अलग हैं। उपनगरीय लोग पारिवारिक मूल्यों को उपलब्धि और करियर से ऊपर रखते हैं, और धन संचय करने में भी उत्सुक नहीं होते हैं, जब क आंतरिक शहर के निवासी अमीर बनने के लए कुछ भी करने में सक्षम हैं।

हालां क, भारत में जनसंख्या में तेजी से वृ द्ध उपनगरों को भी प्रभा वत कर रही है। वे एक शहरी केंद्र की समस्याओं का सामना कर रहे हैं जिसमें यातायात की भीड़भाड़ से लेकर गरीबी, बढ़ती अपराध दर, वशेष रूप से चोरी, बर्बरता, वायु प्रदूषण, भौतिक वातावरण का उजाड़पन, आवास की समस्याएं और वत्तीय समस्याएं शा मल हैं। जो कुछ भी समस्याएँ हैं, एक नई प्रवृत्ति है। हालां क,

शुरुआती हड़बड़ी और अनियोजित उपनगरीयकरण प्र क्रया के वपरीत, यह अ धक योजनाबद्ध हो सकता है और आने वाले दिनों में एक क्र मक वकास प्राप्त कर सकता है।

भारत में एक निश्चित सीमा से परे बस्ती में निवा सयों की बढ़ती संख्या उनके और शहर के चरित्र के बीच संबंधों को प्रभा वत कर रही है। सहभा गता की प्र क्रया में भाग लेने वाले व्यक्तियों की संख्या जितनी अ धक होती है, उनके बीच अंतर करने की क्षमता उतनी ही अ धक होती है, जिससे व्यक्तिगत रास्ते, व्यवसाय, सांस्कृतिक जीवन और वचार, और वश्वास और मूल्य व्यापक रूप से अलग हो जाते हैं। यही भारत में हो रहा है।

ये व वधताएं व्यक्तियों के स्थानिक अलगाव को जन्म दे रही हैं। पीढ़ियों से एक साथ रहने के लए रिश्तेदारी, पड़ोस और भावनाओं की भावनाएं ऐसे व वध मूल और पृष्ठभू म के कारण इन लोगों के बीच अनुपस्थित हैं। ऐसी परिस्थितियों में, प्रतिस्पर्धा और औपचारिक नियंत्रण तंत्र एकजुटता के बंधनों का वकल्प होते हैं जो एक लोक या ग्राम समाज को एक साथ रखते हैं।

जनसंख्या में वृ द्ध और घनत्व में वृ द्ध का एक अन्य महत्वपूर्ण परिणाम यह है क निवा सयों के बीच व्यक्तिगत पारस्परिक परि चत, जिसमें आमतौर पर पड़ोस की भावना में वृ द्ध शा मल है, का अभाव भारत में दिखाता है। इस प्रकार, संख्या में वृ द्ध में सामाजिक संबंध का चरित्र, गुमनामी की अनुपस्थिति और मानव संबंधों के वभाजन को शा मल कया जा सकता है।

एक संगठन के रूप में परिवार सामाजिक संरचना में परिवर्तन से काफी हद तक प्रभा वत होता है। सामाजिक संरचना में बदलाव परिवार के सदस्यों की स्थिति को प्रभा वत करता है। परिवार के कई बुनियादी कार्य अब माध्य मक संस्थानों और संघों द्वारा कए जाते हैं। उदाहरण के लए, पूर्व में बाल-पालन और शक्षा परिवार के प्राथ मक कार्य थे। ले कन आज शहरी केंद्रों में, दोहरे आय वाले परिवारों की आवश्यकता है। यह महिलाओं को घर से बाहर निकलने और कमाई शुरू करने के लए मजबूर करता है। स्वाभा वक रूप से, बच्चे के पालन-पोषण का कार्य शशु देखभाल केंद्र में स्थानांतरित कया जाता है। वर्तमान समय में महिलाओं की बदलती स्थिति और महिलाओं की भू मका ने भी परिवार की संरचना में बदलाव लाया है। औद्यो गक वकास के साथ, उनकी भू मका केवल घर की चार दीवारों तक ही सी मत नहीं है, बल्कि उन्हें बाहर जाकर भी काम करना पड़ता है। इस परिवर्तन से पति-पत्नी के संबंधों में बदलाव आया है - वे अब साथी या दोस्तों के अ धक हैं।

भारत में शहरीकरण, तेजी से आ र्थक उदारीकरण, बढ़ती सामूहिक राजनीतिक उथल-पुथल, हिंसक संघर्ष और अनु चत और अपर्याप्त नीति शहरी क्षेत्रों में अपराध का आधार है। इसके अलावा, गरीबी और असमानता बढ़ती अपेक्षाओं और नैतिक आक्रोश की वजह से है क समाज के कुछ सदस्य समृद्ध हो रहे हैं जिन्होंने अपराध के उच्च और बढ़ते स्तर में योगदान दिया है।

शहरीकरण से बेरोजगारी हो सकती है। लोगों को बेहतर जीवन स्तर, बेहतर स्वास्थ्य सेवा और नौकरी के अवसरों की झूठी उम्मीद में शहरी क्षेत्रों की ओर आक र्षत कया जाता है। वास्तव में, शहरों में लोगों का एक उच्च प्रवाह केवल स्थिति को बढ़ा देता है और लोग खुद को ऐसी दुनिया में पाते हैं जहां वे बदतर हैं। बहुत कम लोग अपनी कस्मत बनाते हैं, और बाकी लोग अपने मौके का इंतजार करते हैं। भारत में अपराध और म लन बस्तियों का वकास यह शहरीकरण के सबसे स्पष्ट प्रभावों में से एक है। मशीनीकरण के कारण शहरी क्षेत्रों में बेरोजगार लोग बढ़ रहे हैं। मशीनें व्यक्तियों की जगह ले रही हैं, और केवल कुछ व्यक्ति, जो इन मशीनों का उपयोग करना सीख सकते हैं, रोजगार पा रहे हैं। बाकी लोग बेरोजगार हैं। इस प्रकार, ग्रामीण क्षेत्रों के बजाय शहरों में बेरोजगारी एक बड़ी समस्या बनती जा रही है। चूं क शहर में कम नौकरियों के लए अ धक लोग प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं, बेरोजगारी एक निरंतर समस्या है। जो लोग नौकरी पाने में असमर्थ हैं वे खुद को झुग्गियों में भटकने और कुछ आय-उत्पादक गति व ध की तलाश में हैं।

भारत में आ र्थक वकास पर शहरी गरीबी का गंभीर प्रभाव है। कई लोग जो आजी वका की तलाश में शहर आते हैं वे गरीबी में दुनया से चले जाते हैं। परिणाम भखारी और वेश्यावृत्ति है। सरकार इस बड़ी समस्या को दूर करने के लए कई योजनाएं अपना रही है। भारत में शहरीकरण अनैच्छिक रूप से महिलाओं और बच्चों की तस्करी की ओर ले जाता है। यह बढ़ती हुई परिवर्तन की प्र क्रया से उत्पन्न सामाजिक अ भव्यक्तियाँ हैं, और गरीबी, बेरोजगारी, बढ़ती शहरी / ग्रामीण वषमताओं की घटनाओं से और अ धक जटिल और जटिल हो गई है, लंग भेदभाव और प्रवास को खत्म करती है। अभ्यास का पूरा पैमाना अज्ञात रहता है क्यों क कुछ महिलाएं और बच्चे रिपोर्ट करने के लए तैयार या सक्षम होते हैं क उनके साथ पु लस या महिला संगठनों या गैर सरकारी संगठनों के साथ क्या हुआ है।

जब क हर साल तस्करी करने वाली महिलाओं और बच्चों की संख्या का अनुमान लगाना बहुत मुश्किल है, यह भी माना जाता है क महिलाओं और बच्चों की तस्करी एक बढ़ती हुई समस्या है। अक्सर, महिलाओं और बच्चों को गरीब ग्रामीण क्षेत्रों से आ र्थक रूप से अ धक उन्नत शहरी क्षेत्रों में लाया जाता है, कुछ को उनके घर गांवों से अपहरण कर लया जाता है और बड़े शहरों में बेच दिया जाता है। वेश्यावृत्ति और गोद लेने के लए कुछ महिलाएं और बच्चे सीमाओं के पार भी भेजे जाते हैं। गरीबी नए तरीकों से खुद को प्रकट कर रही है, और इसका बहुत सारा बोझ महिलाओं और बच्चों पर पड़ता है। यह आश्चर्य की बात नहीं है क कई युवा महिलाओं के पास शहरी क्षेत्रों में रोजगार पाने के लए मजबूत आ र्थक प्रोत्साहन हैं, जहां उनके घरेलू गांवों की तुलना में जीवन स्तर ऊंचा है, या उन्हें बड़े शहरों की यात्रा करनी है, जो वर्षों से उनके लए दुर्गम थे या उनका स्वप्न था।

हाल के अध्ययनों से यह भी संकेत मलता है क कस्बों / शहरों में यौन शोषण वेश्यालय में ही नहीं बल्कि बार, बीयर हॉल और अन्य मनोरंजन स्थलों में स्था पत स्थानों में होता है। गरीबी, शक्षा की कमी और रोजगार के अवसर कुछ ऐसे प्राथ मक कारण हैं जिनकी वजह से युवा महिलाएं वेश्यावृत्ति में शा मल हो जाती

आज का शहरी वातावरण प्राकृतिक वातावरण नहीं है। यह मनुष्य द्वारा बनाया गया एक कृत्रिम वातावरण है। जनसंख्या के उच्च घनत्व और तेजी से औद्यो गकीकरण ने भारत के शहरी वातावरण को काफी हद तक प्रदू षत कर दिया है। पर्यावरण प्रदूषण की समस्या शहरी पर्यावरण के लए एक गंभीर खतरा बन गई है।

निष्कर्ष:

अध्ययन में पाया गया क भारत मे शहरीकरण की पृष्ठभू म में कई शा मल तत्व हैं जो शहरीकरण के उपरोक्त दुषपरिणामों के अलावा एक ऐसी स्थिति का निर्माण कर रहे हैं जो सभ्यता की प्र क्रया को गति प्रदान करती है। औद्यो गक वकास और क्रांति सभ्यता के लए सही परिस्थितियाँ पैदा कर रहे हैं। ऐसी भौगो लक स्थिति जिसमें मानव की जरूरतें आसानी से पूरी होती हैं, सभ्यता का मार्ग प्रशस्त होता है। वैज्ञानिक प्रगति, नए आ वष्कार, नए साधनों का वकास, परिवहन के साधनों में प्रगति आदि जैसे तथ्य हैं, जो सभ्यता के लए एक वशेष स्थिति का निर्माण कर रहे हैं। शहर व्यवसायीकरण का केंद्र बन गए है। भारत के कई शहरों में कई तरह के छोटे और बड़े व्यवसाय स्था पत कए जा रहे हैं। जनसंख्या वृ द्ध के कारण, मनुष्य नई चीजों को करके अपनी आवश्यकताओं और इच्छाओं को पूरा करना चाहता है। इसके लए वह काम की तलाश में एक जगह से दूसरी जगह जाता है। इस प्रकार व्यक्ति की गतिशीलता बढ़ रही है। यह गतिशीलता सभ्यता के लए स्थितियां बना रही है।

ग्रंथ सूची:

1) **Ramesh Singh, Indian Economy (For Civil Services Examination), McGraw Hill Education (India) Private Limited, Chennai 6th Edition**
2) **The Indian Economy - Sanjiv Verma, Unique Publication, Jan 2013**
3) **Indian Economy - Misra & Puri, Himalaya Publishing House, Mumbai, 2010**
4) भारतीय अर्थव्यवस्था, रुद्रदत्त एवं के. पी. एम. सुंदरम, एस. चाँद एंड कंपनी, नई दिल्ली (हिन्दी)
5) भारतीय अर्थव्यवस्था, रमेश संह, म्यकग्रेव एजुकेशन प्राइवेट ल मटेड, चेन्नई, 7 वां संस्करण

समाचार पत्र: टाइम्स ऑफ इं डया, नवभारत, लोकमत

वेबसाइट:

- https://www.yourarticlelibrary.com/society/the-consequences-of-urbanization-on-indian-society-essay/4674
- https://sites.google.com/site/impactsofurbanisation/social-impacts
- https://www.worldbank.org/en/news/feature/2011/09/22/india-urbanization
- https://www.open.edu/openlearncreate/mod/oucontent/view.php?id=79940&printable=1/
- https://journals.sagepub.com/doi/10.1177/097492841006600106
- https://journals.sagepub.com/doi/full/10.1177/0956247813490908
- https://www.conserve-energy-future.com/causes-effects-solutions-urbanization.php
- https://thewire.in/culture/india-urbanisation-smart-cities
- https://www.allianceexperts.com/en/knowledge/countries/asia/opportunities-in-urbanisation-in-india/